शिवरात्रि-12 फरवरी

भूमरा का शिव मंदिर

रश्मि झारिया, डॉ. पुष्पा तनेजा

भूमरा का शिव मंदिर

एक मुखी शिव

परब्रह्म यद्यपि शब्द, स्पर्श, रस, रूप तथा गंध इन सबसे शून्य है फिर भी पुराणों में इसके द्विविध रूप का वर्णन हुआ है। उस परम सत्ता के दो रूप प्रकृति तथा विकृति हैं। अव्यक्त, अदृष्ट एवं अलक्ष्य रूप प्रकृति हैं, इसी को निर्गुण रूप भी कहते हैं। दूसरा रूप विकृति है यह साकार रूप है। इस रूप की पूजा-अर्चना तथा आराधना की जाती है। साकार रूप आधारपूर्ण होने के कारण सरलता से पूजा जा सकता है। यही ब्रह्म का सगुण रूप है। ईश्वर के साकार स्वरूप ने आगे चलकर प्रतिमाओं का रूप धारण कर लिया। पुराणों में वर्णित ईश्वर के साकार रूप को कलाकारों ने विभिन्न कलाओं के माध्यम से सांसारिक भूमिका पर लाने का प्रयास किया और कालांतर में आराध्य देव को प्रतिष्ठित करने हेतु मंदिरों के रूप में देवस्थलों ने अपना स्वरूप ग्रहण किया।

ईश्वर के इसी साकार रूप को व्यक्त करता भूमरा का प्राचीन शिवमंदिर है। यहाँ शिव का एकमुख लिंग स्वरूप अद्वितीय है। प्रतीत होता है कि शिल्पी ने अपने मन के भावों को पाषाण के माध्यम से अभिव्यक्त किया है।

लगभग छठवीं शताब्दी ईसवीं में निर्मित शिवसाधना का यह प्राचीन केन्द्र गुप्तकालीन स्थापत्य का उत्कृष्ट नमूना है।

भूमरा ग्राम सतना जिले की उचहरा तहसील होकर लगभग 19 किलोमीटर परसमनिया मार्ग के आगे लगभग दो किलोमीटर अंदर स्थित है। उचहरा से परसमनिया तक नई पक्की सड़क का कार्य निर्माणाधीन है। परसमनिया से लगभग दो किलोमीटर तक का रास्ता पगडंडी से होकर जाता है। शिवमंदिर मुख्य सड़क से थोड़ी दूरी पर बना हुआ है। वर्तमान में इसे भाकुलनाथ के नाम से जाना जाता है। यह सतना जिले का धार्मिक एवं पुरातात्विक महत्व का स्थल है। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग ने इसे संरक्षण में ले लिया है और इसके चारों ओर चहार दीवारी का निर्माण किया गया है। महाशिवरात्रि के दिन यहाँ विशाल मेला लगता है और आसपास के ग्रामीणजन यहाँ बड़ी संख्या में आते हैं।

मंदिर का अधिकांश भाग भग्न अवस्था में है। यह मंदिर वर्गाकार है। इसकी लम्बाई लगभग 11 मीटर और चौड़ाई भी लगभग उतनी ही है। मंदिर में पौने दस मीटर लम्बा और चार मीटर चौड़ा सभा मंडप है। सभा मंडप के सामने नीचे लंबी सीढ़ियाँ हैं। मंडप से सटा हुआ गर्भगृह है। यह लगभग पौने पाँच मीटर वर्गाकार आकार का है, जिसकी छत सपाट है। इस गर्भगृह के चतुर्दिक प्रदक्षिणापथ है। गर्भगृह का प्रवेश द्वार भी यथेष्ट रूप से अलंकृत है। द्वार के दाहिने

चौखट के दाएँ स्तंभ पर मकरवाहिनी गंगा

स्तंभ पर मकरवाहिनी गंगा और बाएँ पर कूर्मवाहिनी यमुना की आकृतियाँ उत्कीर्ण हैं। द्वार चौखट पर सिरदल के बीच में शिव की अर्धमूर्ति है। इस मूर्ति के दोनों ओर मालाधारी गंधर्वों की मूर्तियाँ हैं।

मंदिर के गर्भगृह में एकमुख शिवलिंग की प्रतिमा स्थापित है। शिव सृष्टि का संहार करने वाले कहे गए हैं। ये ही एक ऐसे देव हैं, जिनकी आराधना वैदिक काल से पूर्व सिंधु घाटी की सभ्यता में भी होती थी। शिव ही एक ऐसे देवता हैं जो यति तथा भोगी, राजा तथा रंक दोनों के आराध्य देव बन सके। भंडारकर महोदय तो पशुपति के रूप में इन्हें जंगल के व्यक्तियों का आराध्य देव मानते हैं।

शिव की उपासना सदा से दो रूपों में होती रही है– प्रथम लिंग रूप तथा द्वितीय मानव रूप। शिव त्रिदेवों के अंतर्गत सृष्टि का संहार करने वाले देव स्वीकार किए गए हैं। प्रलय के समय संपूर्ण चराचर इन्हीं में समा जाता है। इसी रूप में वे अपार शक्ति को धारण करते हैं। इन्हीं के द्वारा पुनः सृष्टि होती है, इसी कारण इनका लिंगरूप अधिक महत्वपूर्ण है।

भूमरा के मंदिर में स्थापित एकमुख शिवलिंग की प्रतिमा शांति, सौम्यता और समाधिस्थ भाव को प्रकट करती है। यह शिवलिंग आधार से ऊपर तक 38 इंच ऊँचा है तथा गोल प्रस्तर में है जो संपूर्ण रूप से बिना किसी क्षति के है।

मुख की मुद्रा शिव की प्रसिद्ध समाधि मुद्रा का ज्योतन करती है। गले में मणिमाला के अतिरिक्त एक बहुविध रत्नजड़ित हार है। कान लंबे हैं तथा उनमें झुमके वाले कुंडल पहने हैं। तृतीय नेत्र उभरी हुई रेखाओं में बनाया गया है। ऊपर को बाँधी हुई जटाओं के प्रारंभ में माथे पर स्वर्ण मुकुट है जिसके ऊपर रत्नजड़ित शीर्ष लगा है तथा कोनों की ओर भी दो रत्नजड़ित शीर्ष दोनों ओर हैं। इस मुकुट के पीछे शिव की जटाओं को दिखाया गया है जो कि मध्य में केशबधनों से ही बँधी हुई दिखाई है। जटाओं के ऊपर चंद्रमा की आकृति है तथा केशों को गुठित रूप में ऊपर से नीचे झूमते हुए प्रस्तुत किया है। केशों का गुँथा हुआ यह स्वरूप गले में पहनी हुई माला के समानांतर तक आया हुआ है जो कि गंगा के प्रवाह का प्रतीक माना जा सकता है। शिव की यह आकृति प्रायः संपूर्ण लिंग की एक पहल के उतार से नीचे की चौका तक प्रस्तुत की गई है। लिंग की गोलाई साफ चिकनी है।

मंदिर की चौखट के ऊपर अर्ध शिव मालाधारी गंधर्वों के साथ

चौखट के बाएँ स्तंभ पर कुर्मवाहिनी यमुना

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि भूमरा अत्यंत महत्वपूर्ण शिवसाधना का केन्द्र था। प्राचीनकाल में इसके आसपास घना वन रहा होगा। समय के साथ यहाँ का प्राकृतिक सौंदर्य यद्यपि पहले जैसा नहीं रहा तथापि अपने अद्भुत शिल्प के कारण भूमरा का मंदिर और शिवलिंग अब भी पुरातत्ववेत्ताओं के आकर्षण का केन्द्र है। मंदिर के प्रांगण में पुरातत्व विभाग द्वारा सुंदर बगीचा विकसित कर लिया गया है और इसी प्रांगण में एक संग्रहालय भी निर्माणाधीन है। सौर ऊर्जा से चलित विद्युत लैंप से यहाँ रात भर जगमग प्रकाश रहता है। परसमनिया से यहाँ तक का पहुँच मार्ग (पक्की सड़क) बनाकर इसे पुरातात्विक पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया जा सकता है, ताकि अतीत को अपने में संजोए इस पुरातात्विक धरोहर के बारे में प्रदेश के सभी लोग जान सकें और इसके सौंदर्य का दर्शन लाभ ले सकें।

(लेखिका द्वय महाविद्यालय में सहा. प्राध्यापक हैं।)

❖